2 दिसम्बर 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 33, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (प्रथम), 2010 सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

'डॉ. हुकमचंद भारिल्ल स्वाध्याय भवन' का शिलान्यास समारोह सम्पन्न

हेरले-कोल्हापुर (महा.) : सर्वोदय स्वाध्याय समिति हेरले विगत पंद्रह वर्षों से महाराष्ट्र और कर्नाटक प्रान्त में प्रशिक्षण शिविर, ग्रुप शिविर, बालसंस्कार शिविर, पाठशाला संचालन इत्यादि के माध्यम से तत्त्वप्रचार का कार्य सुचारुरूप से कर रही है। इसमें श्री दिलीपभाई शाह-अहिंसा चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई का विशेष सहयोग रहा है। तत्त्वप्रचार की इन गतिविधियों को स्थायित्व व गति प्रदान करने हेतु एक स्थान विशेष की आवश्यकता अनेक वर्षों से महसूस की जा रही थी, अत: कोल्हापुर शहर से मात्र 12 कि.मी. दूर हेरले ग्राम (जहाँ 15 शास्त्री विद्वान हैं) में 40 हजार वर्ग फीट भूमि स्थानीय दातारों के सहयोग से क्रय कर ली गयी है। इस भूमि पर जिनमंदिर, स्वाध्याय भवन, विद्यालय, वाचनालय, छात्रावास, विद्वत निवास, भोजनशाला आदि के निर्माण की योजना है। इसमें से प्रथम चरण के रूप में स्वाध्याय भवन के शिलान्यास का कार्यक्रम दिनाँक 14 व 15 नवम्बर को अनेक मांगलिक आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ।

मंचासीन (बायें से दायें) - श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, सौ. गुणमाला भारिल्ल व सौ. शशि सेठी जयपुर, **पीछे की ओर** - श्री अण्णासाहेब खेमलापुरे, ब्र.यशपालजी जैन व सौ. इंदूमती खेमलापुरे

दिनाँक 14 नवम्बर को जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील, पण्डित महेशजी पाटील एवं पण्डित उमेशजी शास्त्री के विविध विषयों पर प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित संयमजी शास्त्री ने **सप्त व्यसन** विषय पर लघु नाटिका प्रस्तुत की। दोपहर 3 बजे डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल परिवार एवं शिलान्यासकर्त्ता श्री प्रकाशचंदजी सेठी परिवार का सभी साधर्मियों ने गाजे बाजे के साथ बड़ी धूमधाम से स्वागत किया, तत्पश्चात् डॉ. भारिल्ल का मांगलिक उद्बोधन हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत आचार्य विद्यानंदजी महाराज के सानिध्य में सन् 2006 में दिल्ली में संपन्न समयसार सप्ताह की वीडियो सी.डी. दिखाई गई। इसके पश्चात् डॉ. भारिल्ल का मार्मिक प्रवचन हुआ।

दिनाँक 15 नवम्बर को प्रात: बड़ी धूमधाम से निकली शोभायात्रा में हजारों साधर्मी भाई-बहन मंगल कलश, स्वर्ण और रजत ईंटें लेकर शिलान्यास स्थल पर पहुँचे। जहाँ घटप्रभा निवासी अण्णासाहेब सिद्धाप्पा खेमलापुरे परिवार द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

सभा की अध्यक्षता मुख्य शिलान्यासकर्त्ता श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर ने की। मंचासीन अतिथियों में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अण्णासाहेब खेमलापुरे, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित महावीरजी पाटील, श्री सुभाषजी भोजे, श्री शांतिनाथ खोत, श्री भूपालजी आलमान (अध्यक्ष-दि.जैन समाज हेरले), श्री एन.एस. पाटील, श्री ए.बी. चौगुले, श्री रियाज जमादार (सरपंच-हेरले), श्री राजगोंड पाटील, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती इन्दुमती खेमलापुरे, श्रीमती शशी सेठी आदि उपस्थित थे। ब्र.यशपालजी जैन जयपुर ने दातार का विस्तृत परिचय दिया और निर्माणाधीन भवन का नाम 'डॉ. हुकमचंद भारिल्ल स्वाध्याय भवन' घोषित किया।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि डॉ. भारिल्ल के नाम से बननेवाला यह स्वाध्याय भवन अध्यात्म का एक आदर्श केन्द्र बनेगा। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि गुरुदेवश्री के पश्चात् डॉ. भारिल्ल ने समयसार का सार जन-जन तक पहुँचाया है; अत: डॉ. भारिल्ल के नाम के साथ यह भवन समयसार भवन के रूप में विख्यात रहेगा। गांव की जैन समाज कमेटी के अध्यक्ष श्री भूपालजी आलमान ने कहा कि इस गांव का जैन समाज इस योजना में पूर्णरूप से शामिल होगा और सहयोग देगा।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि 24 तीर्थङ्करों, आचार्य धरसेन, कुन्दकुन्द, समन्तभद्र आदि आचार्यों और पण्डित टोडरमलजी, पण्डित बनारसीदासजी, पण्डित सदासुखदासजी, पण्डित दौलतरामजी आदि पण्डितों ने जो सच्चा दि.जैन धर्म अपनाया उसी का अनुसरण गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने किया। विगत 50 वर्षों से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने हमें शुद्ध तत्त्वज्ञान और सच्चा दिगम्बर पन्थ बताया, उन्हीं का अनुकरण हमने किया है। इसमें किसी प्रकार का संदेह और विवाद नहीं है। नया मंदिर बनने से किसी भी

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

सम्पादकीय – 47

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ७३

विगत गाथा ७१–७२ में कहा है कि वह महान आत्मा वस्तुतः तो नित्य चैतन्य उपयोगी होने से एक ही है; परन्तु विविध अपेक्षाओं से या विभिन्न धर्मों की अपेक्षा उसके यहाँ १० भेद किये हैं।

प्रस्तुत गाथा में मुक्त व संसारी जीवों के गमन का व्याख्यान है।

मूलगाथा इसप्रकार है –

पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधेहिं सव्वदो मुक्को।
उड्ढं गच्छदि सेसा विदिसावज्जं गदिं जंति।।73।।

(हरिगीत)

प्रकृति थिति अनुभाग बन्ध प्रदेश से जो मुक्त हैं।
वे ऊर्द्धगमन स्वभाव से हैं प्राप्त करते सिद्धपद।।73।।

प्रकृति, स्थिति, अनुभाग एवं प्रदेश बंध से सर्वतः मुक्तजीव ऊर्ध्वगमन करता है। शेष संसारी जीव मरणांत में चारों विदिशाओं को छोड़कर पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा ऊर्ध्व एवं अधो – इन छह दिशाओं में गमन करते हैं तथा मुक्त जीवों के स्वाभाविक रूप से ऊर्ध्व गमन होता है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि ''बद्ध जीव को कर्म निमित्तिक षड्विधगमन होता है, मुक्त जीव को भी स्वाभाविक ऊर्ध्वगमन होता है – ऐसा यहाँ कहा है।''

भावार्थ यह है कि समस्त रागादिभाव रहित जो शुद्धात्मानुभूति लक्षण ध्यान के बल द्वारा चतुर्विध बंध से सर्वथा मुक्त हुआ जीव स्वाभाविक अनन्त ज्ञानादिगुणों से वर्तता हुआ एक समयवर्ती अविग्रह गति द्वारा स्वाभाविक ऊर्ध्वगमन करता है।

कवि हीरानन्दजी काव्य में इसी भाव को व्यक्त करते हैं –

(दोहा)

प्रकृति–थिती अनुभाग सौं, अरु प्रदेश सौं बन्ध।
मुक्तजीव ऊरध चलैं विदिसा विनगति अंध।।३३१।।

(सवैया इकतीसा)

जग में अनादि जीव बंधन विधान बंध्या,
प्रकृति प्रदेस बंधौ की योगतैं विलोकिए।
थिति और अनुभाग होंहि हैं कषाय सेती,
एई चारों बंध भेद जीवभाव रोकिए।।
भवतैं भवान्तर कौं चलै चारौं दिसा और,
ऊरध अधोविभाग जहाँ जाकौं लोकिए।
बंधन सौं मोख होय ऊरघ कौं जाय सोई,
रज्वी गति ग्रन्थ विषैं सदाकाल धोकिए।। ३३२।।

उक्त छन्दों में कवि हीरानन्द ने आचार्य अमृतचन्द्रदेव के भाव को इसप्रकार कहा है कि जग में अनादि से जीव प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशबंधों से बंधे हैं। इनमें प्रकृति व प्रदेशबंध में योग निमित्त है तथा स्थिति व अनुभाग में कषाय निमित्त होती है। जन्मान्तर के लिए जीव चारों दिशाओं में एवं ऊपर–नीचे गमन करता है।

गुरुदेवश्री कानजी स्वामी भावार्थ में कहते हैं[१] कि ''जो जीव आठों कर्मों का अभाव करता है, वह एक समय में अपने ऊर्ध्वगमन स्वभाव से श्रेणीबद्ध प्रदेशों द्वारा मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

मोक्षगामी जीव ऊर्ध्वगमन स्वभाव से एकसमय में लोकाग्र में पहुँच जाता है तथा समस्त संसारी जीव मात्र दिशाओं में गमन करते हैं, चार–विदिशाओं में नहीं जाते।''

यहाँ तक जीवद्रव्य का व्याख्यान पूर्ण हुआ। अब आगे पुद्गल द्रव्य अस्तिकाय का व्याख्यान करेंगे। ●

गाथा– ७४

अब प्रस्तुत गाथा में पुद्गलास्तिकाय का व्याख्यान करते हैं।

मूलगाथा इसप्रकार है –

खंधा य खंधदेसा खंधपदेसा य होंति परमाणू।
इदि ते चदुव्वियप्पा पोग्गलकाया मुणेदव्वा।।74।।

(हरिगीत)

स्कन्ध उनके देश अर परदेश परमाणु कहे।
पुद्गलकाय के ये भेद चतु यह कहा जिनवर देव ने।।74।।

पुद्गल काय के चार भेद हैं ह्न १. स्कन्ध २. स्कन्धदेश ३. स्कन्ध प्रदेश और ४. परमाणु।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि यह पुद्गलद्रव्य के भेदों का कथन है। ये पुद्गल द्रव्य कदाचित् स्कन्ध पर्याय से, कदाचित् स्कन्धदेश रूप पर्याय से, कदाचित् स्कन्ध प्रदेशरूप पर्याय से और कदाचित् परमाणु रूप पर्याय से यहाँ लोक में हैं। इसप्रकार उनके चार भेद हैं; पुद्गल द्रव्य के अन्य कोई भेद नहीं है।

कवि हीरानन्दजी उक्त भाव को काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

खंद – खंददेसी लसै, खंद प्रदेस बखान।
परमाणु ए चारि विध, पुद्गल–दरब प्रमाण।।३३४।।

(सवैया इकतीसा)

याही लोक विषैं एक पुद्गल अनेकरूप,
खंध परजाय करि काहू काल होई है।
खंधदेसरूप परजाय काहू काल होई,
काहूकाल खंधपरदेस रूप सोई है।।
काहू काल परमानू परजाय रूप होई,
चारों भेद पुद्गल कै और नाहिं कोई है।
तातैं और भेद कोई पुद्गल का नाहीं कहा,
एक अंग सरवंग कहे मिथ्या जोई है।।३३५।।

इन छन्दों में कवि कहते हैं कि स्कन्ध, स्कन्धदेश, प्रदेश और परमाणु पुद्गल के ये चार प्रकार हैं।

इस लोक में एक पुद्गल द्रव्य अनेक रूपों में हैं – किसी एक पर्याय

१. श्री सद्गुरु प्रवचनप्रसाद : पंचास्तिकाय प्रवचन गाथा ७३ प्रसाद नं. १६४

में उसका स्कन्ध रूप होता है, किसी दूसरी पर्याय में स्कन्धदेश रूप होता है तो किसी तीसरी पर्याय में प्रदेशरूप तथा चौथी पर्याय में परमाणुरूप अवस्था होती है। ये चारों भेद पुद्गल के हैं, इनके सिवाय पुद्गल का और कोई भेद नहीं है।

इसी बात को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी इसप्रकार कहते हैं कि पुद्गल के स्कन्ध, स्कन्ध का आधा भाग, चौथा भाग एवं परमाणु - इसप्रकार ये चार प्रकार पुद्गल हैं; जोकि मात्र जानने योग्य हैं। उन्हें कोई न बना सकता है और न तोड़ सकता है। इसलिए जीव को पुद्गल के कर्तृत्व का अभिमान छोड़ देना चाहिए।

अज्ञानी जीव पर पदार्थों के ग्रहण-त्याग के स्वामी होते हैं तथा धर्म के नाम पर थोड़ा पर पदार्थों को त्यागने का अभिमान करके ऐसा मानते हैं कि 'मैंने इतने पदार्थों को त्यागा है' जबकि पर पदार्थों को छोड़ना व ग्रहण करना जीव के हाथ में है ही नहीं। ज्ञानी जीव भी मात्र उन पदार्थों के प्रति ममत्व के भाव को छोड़ते हैं। परपदार्थ अपने समय में स्वतः छूटते हैं, उनके त्याग व ग्रहण का कर्त्ता जीव नहीं है।

जब पुद्गल एकत्रित होकर रहते हैं या छूटे-खुल्ले (बिखरे) रहते हैं तब वे मिलते-बिछुड़ते हुए छोटे-बड़े स्कन्धों के रूप में रहते हैं। जब वे स्वयं के कारण ही अर्द्ध भाग रूप होते हैं, तब वे पुद्गल स्कंधदेस के रूप में होते हैं; उन्हें इन रूप अन्य कोई करता नहीं है, वे स्वतः ही उक्त चार रूप में परिणमित होते हैं। जो ऐसा ज्ञान करे तो पुद्गलों के कर्तृत्व का अभिमान छूट जाता है और ज्ञानी मात्र उनका ज्ञाता रह जाता है।

अज्ञानी माता-बहिनें घर की वस्तुओं में ममता करती हैं। भाई लोग रुपया-पैसा आदि में अपनापन करते हैं और यह मानते हैं कि वह स्कन्ध की अवस्था हम से होती है। रुपयों की, रोटी की, शाक वगैरह जड़ पदार्थों की जो अवस्था होती है, जबकि वह पुद्गलपरमाणु के कारण होती है, जीव उसका कर्त्ता नहीं है - ऐसा ज्ञान करे तो पुद्गल में कर्तृत्व का अभिमान छूट जाता है और स्वयं केवल ज्ञाता रह जाता है।''

इसप्रकार इस गाथा में पुद्गल के चार भेद बताये हैं तथा गुरुदेवश्री ने पुद्गल के विषय में अज्ञानी की मान्यता बताते हुए उनमें ममत्व त्याग की प्रेरणा देते हुये कहा है कि पुद्गल के चार भेदों को अपने ज्ञान का ज्ञेय बनाकर अपने स्वरूप में स्थिर होने का पुरुषार्थ करना चाहिए। ●

हार्दिक बधाई !

१. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं आचार्य कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिरि के भूतपूर्व प्राचार्य पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री मौ को अखिल भारतीय दि.जैन खरौआ महासभा ग्वालियर सहसचिव पद पर मनोनीत किया गया है।

२. श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक चि. अनंतवीरजी शास्त्री फिरोजाबाद एवं सौ. आकांक्षा जैन का विवाह दिनाँक 22 नवम्बर को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में 251/- रुपये प्राप्त हुये।

३. श्रीमती शांति महावीरप्रसादजी जैन जयपुर के बेटी-दामाद सौ. प्रीति एवं चि.पवनकुमार के विवाह के 25 वर्ष (सिल्वर जुबली) पूरे होने के उपलक्ष्य में 251/- रुपये सधन्यवाद प्राप्त हुये।

एतदर्थ टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

अष्टाह्निका महापर्व संपन्न

१. विश्वासनगर-दिल्ली : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनाँक 14 से 21 नवम्बर तक 170 तीर्थङ्कर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के ग्रन्थाधिराज समयसार की गाथा-144 पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रातः समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार एवं सायं न्यायदीपिका पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित महेन्द्रजी इन्दौर द्वारा संपन्न हुये।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता एवं ध्वजारोहणकर्त्ता श्री रहतुमलजी नरेन्द्रकुमारजी जैन (बाहुबलि एन्क्लेव) थे। मुख्य कलश व पंचमेरु विराजमानकर्त्ता श्री वीरेन्द्रकुमारजी विकासजी जैन विश्वासनगर, प्रातिहार्य विराजमानकर्त्ता श्री सुनीलकुमारजी जैन विश्वासनगर एवं यज्ञनायक श्री वज्रसेनजी अशोकनगर थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली ने संपन्न कराये।

२. देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनांक १४ से २१ नवम्बर तक अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्रमण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातः गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों का भी लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित दीपकजी धवल भोपाल एवं ब्र.वासन्तीबेन द्वारा कक्षायें ली गई।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री रमणीकभाई सावला (स्वाध्याय परिवार) मुम्बई थे। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल ने संपन्न कराये।

पत्रिका विमोचन सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री दिगम्बर जैन त्रिकालवर्ती तीर्थंकर जिनालय की वेदी प्रतिष्ठा एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश का तृतीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर दिनांक 2 से 4 जनवरी, 2011 तक उदयपुर में आयोजित होने जा रहा है। जिसकी आकर्षक पत्रिका का विमोचन दिनांक 29 नवम्बर को श्री टोडरमल स्मारक भवन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा किया गया। पत्रिका का वाचन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्यअतिथि फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री पीयूष जैन शास्त्री, प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं जयपुर शाखा अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी उपस्थित थे। अन्त में आभार प्रदर्शन श्री अशोकजी गदिया उदयपुर ने किया। **- संजीव गोधा, प्रदेश उपाध्यक्ष**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रकार की फूट नहीं पड़ेगी; अपितु एकता और अखण्डता बनी रहेगी। समाज की एकता और अखण्डता के लिये हम हर कीमत पर सहायता करेंगे। सर्वोदय स्वाध्याय समिति के तत्त्वप्रचार के कार्य की डॉ. भारिल्ल ने बहुत प्रशंसा की।

सभा के पश्चात् श्री प्रकाशचंदजी सेठी परिवार जयपुर के करकमलों द्वारा शिलान्यास विधि संपन्न हुई। उन्होंने अपने पिता स्व.जमनालालजी सेठी की स्मृति में इस भवन के निर्माण में अपनी ओर से पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की।

दोपहर में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के टेप प्रवचन के पश्चात् श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल का प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् दृष्टि का विषय, पंच लब्धि एवं सम्यग्दर्शन का स्वरूप पर डॉ. भारिल्ल का मार्मिक प्रवचन हुआ।

समिति के अध्यक्ष श्री शांतिनाथजी खोत ने समिति का परिचय दिया। भूमि क्रय करने हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले सभी दातारों का सम्मान किया गया, जिनमें श्री चन्द्रकांत मोरची दंपति, तेरदाल (कर्नाटक) का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित राजकुमारजी बरमी, पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील एवं पण्डित राजेन्द्रजी उपाध्ये ने शुद्ध तेरापंथाम्नाय अनुसार सम्पन्न कराये।

इस समारोह को सफल बनाने के लिये पण्डित महावीरजी पाटील, पण्डित जिनचंदजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी आलमान, श्री बालासाहेब वसवाडे, श्री शांतिनाथजी खोत, श्री अभिनन्दनजी पाटील, श्री प्रवीणजी पाटील, श्री दीपकजी चौगुले, श्री बालासाहेब चौगुले, श्री कीर्तिकुमारजी पाटील, श्री सुभाषजी भोजे, श्री प्रदीपजी पाटील, श्री प्रशांतजी पाटील, श्री राजीवजी पाटील, श्री दिग्विजयजी आलमान, श्री नाभिराजजी गंगाई, श्री दीपकजी अथणे, श्री नेमिनाथजी आलमान, सर्वोदय स्वाध्याय समिति के कार्यकर्त्ता एवं हेरले गांव के सभी साधर्मियों का बहुत योगदान रहा।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित जिनचंदजी शास्त्री ने एवं शिलान्यास प्रशस्ति का वाचन पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील ने किया।

अहिंसा अभियान संपन्न

नौगांव (म.प्र.) : भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर समिति नौगांव के तत्त्वावधान में अहिंसा अभियान आयोजित किया गया।

इसके अन्तर्गत छतरपुर, नौगांव, राजनगर (खजुराहो), जतारा, रानीपुर, धौर्रा, तिदनी, मजगुंवा आदि अनेक छोटे–बड़े नगरों में पटाखा विरोधी पोस्टरों के माध्यम से जीव हिंसा एवं आर्थिक हानि से बचने के उपायों को बताकर अनेक बच्चों व बड़ों में जागरूकता उत्पन्न की गयी। अनेक लोगों ने पटाखे न फोड़ने का संकल्प लिया। संकल्प लेने वाले पाठशाला के अनेक बच्चों को समिति द्वारा पुरस्कृत किया गया।

इस अभियान का संचालन पण्डित मोहितजी शास्त्री एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री द्वारा किया गया।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए–4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2011

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 29 जनवरी 2011	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 30 जनवरी 2011	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीयखण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 31 जनवरी 2011	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

– ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक – परीक्षा बोर्ड)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित

अभूतपूर्व होगी मालवा तीर्थयात्रा

(रविवार, 25 दिसम्बर 2010 से रविवार, 1 जनवरी 2011 तक)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडेरशन द्वारा आयोजित वीतराग–विज्ञान यात्रा संघ द्वारा विगत दो वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर तीर्थयात्रा का आयोजन आशातीत सफलता के साथ किया जा रहा है। इसी क्रम में इस वर्ष रविवार 25 दिसम्बर से 1 जनवरी 2011 तक मालवा एवं निवाड के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा आयोजित होने जा रही है, जिसकी तैयारियाँ जोरों से चल रही है। इस अवसर पर यात्रा संघ के भव्य स्वागत के लिये पूरा मालवा उत्साहित है। यात्रा के मार्ग में पड़ने वाली एवं निकटवर्ती स्थानों की फैडरेशन की शाखायें, मुमुक्षु मंडल एवं समाज के प्रतिष्ठित महानुभव सभी यात्रा संघ की अगवानी के लिये तत्पर हो रहे हैं।

यात्रा में 7 दिनों में 16 तीर्थक्षेत्रों के लगभग 198 जिनालयों की वंदना का लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा संघ की टीम ने यात्रियों की सुख–सुविधाओं का ध्यान रखते हुये आरामदायक यात्रा के लिये 2 X 2 पुश बैक डीलक्स बसों, गुजराती/उत्तर भारतीय स्वादानुसार स्वादिष्ट भोजन एवं अल्पाहार की उत्तम व्यवस्था भी की है।

प्रत्येक बस में आध्यात्मिक वातावरण बनाने हेतु टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थी विद्वान भी साथ रहेंगे।

इसके अलावा यात्रा की संपूर्ण जानकारी एवं आवश्यक सामग्री से युक्त आकर्षक गिफ्ट किट भी यात्रियों को देने के लिये तैयार हो चुके हैं।

सुरक्षा एवं परिचय की दृष्टि से यात्रासंघ द्वारा यात्रियों के सुन्दर परिचयपत्र एवं लगेज टेग तैयार करवाये गये हैं।

यात्रियों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध उपयुक्त आवास की सुन्दरतम एवं सुविधायुक्त व्यवस्था व देखभाल के लिये तथा सामान उठाने–रखने हेतु सेवक, सुरक्षा हेतु सुरक्षाकर्मी, मेडिकल सुविधा के लिये एम्बूलेंस, मेडिकल किट, सुरक्षा एवं निश्चिन्तता के लिये ट्रेवल इन्श्योरेन्स की व्यवस्था की गई है। संघ के साथ फोटोग्राफर/वीडियोमेन भी रहेगा।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झाँझरी उज्जैन इत्यादि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त होगा।

सम्पूर्ण यात्रा के दौरान प्रवचन, पूजन–विधान, भक्ति आदि कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

इसप्रकार यात्रा संघ की पूरी टीम यात्रा को भव्यतम और ऐतिहासिक बनाने के लिये रात–दिन मेहनत कर रही है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

12 व 13 दिसम्बर	मेरठ	जैन मिलन – व्याख्यानमाला
14 से 16 दिसम्बर	खतौली	जैनमिलन–अहिंसा गोष्ठी
16 से 23 दिसम्बर	मंगलायतन	पंचकल्याणक
24 से 1 जनवरी, 2011	इन्दौर(मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी, 2011	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
15 से 20 जनवरी, 2011	उदयपुर	पंचकल्याणक
29 जनवरी से 4 फरवरी	भिण्ड	पंचकल्याणक

मालवा यात्रा का कार्यक्रम

25 दिसम्बर (पहला दिन)

गांधीनगर इन्दौर में सायं 6.30 बजे से भक्ति, यात्रा का उद्घाटन, डॉ. भारिल्ल का प्रवचन एवं डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर का सम्मान समारोह।

26 दिसम्बर (दूसरा दिन)

प्रात:	9.00 बजे	प्रवचन – डॉ.भारिल्ल (ढाईद्वीप में)
	9.45 बजे	ढाईद्वीप में शिलान्यास समारोह
दोपहर	12.00 बजे	इन्दौर के मन्दिरों के दर्शन
सायं	4.30 बजे	गोम्मटगिरि में भक्ति एवं प्रवचन

रात्रि विश्राम इन्दौर

27 दिसम्बर (तीसरा दिन)

प्रात:	8.30 बजे	मक्सी दर्शन–पूजन, प्रवचन
दोपहर	1.30 बजे	पुष्पगिरि दर्शन
सायं	4.30 बजे	महावीर तपोभूमि दर्शन, भक्ति, प्रवचन

रात्रि विश्राम इन्दौर

28 दिसम्बर (चौथा दिन)

दोपहर	12.00 बजे	नेमावर दर्शन
सायं	4.30 बजे	गन्धर्वगिरि दर्शन, प्रवचन

रात्रि विश्राम इन्दौर

29 दिसम्बर (पाँचवाँ दिन)

प्रात:	10.30 बजे	कागजीपुरा दर्शन,
दोपहर	12.30 बजे	मांडव साईट सीन
सायं	4.45 बजे	मानतुंगगिरि दर्शन, भक्ति, प्रवचन

रात्रि विश्राम इन्दौर

30 दिसम्बर (छठवाँ दिन)

प्रात :	11.30 बजे	सिद्धवरकूट दर्शन
दोपहर	1.45 बजे	णमोकारधाम व पोदनपुर दर्शन
सायं	4.45 बजे	ऊन दर्शन

रात्रि विश्राम बावनगजा

31 दिसम्बर (सातवाँ दिन)

प्रात:	8.00 बजे	बावनगजा पर्वत पर पूजन विधान
	9.30 बजे	बावनगजा पर्वत की वन्दना
दोपहर	3.30 बजे	पार्श्वगिरि दर्शन
सायं	6.30 बजे	भक्ति, प्रवचन एवं यात्रा समापन
	9.30 बजे	नूतन वर्षाभिनन्दन : जिनेन्द्र चरणों में सादर वन्दन (रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम)

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

65 सत्रहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब परीक्षा के बिना ही मात्र आज्ञानुसारी धर्मधारकों के बारे में बात करते हैं।

उक्त प्रकरण की चर्चा आरंभ करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''तथा कितने ही आज्ञानुसारी जैनी होते हैं। जैसी शास्त्र में आज्ञा है, उसप्रकार मानते हैं, परन्तु आज्ञा की परीक्षा करते नहीं।

यदि आज्ञा ही मानना धर्म हो तो सर्व मतवाले अपने-अपने शास्त्र की आज्ञा मानकर धर्मात्मा हो जायें; इसलिए परीक्षा करके जिनवचन की सत्यता पहिचानकर जिनआज्ञा मानना योग्य है।

बिना परीक्षा किये सत्य-असत्य का निर्णय कैसे हो ? और बिना निर्णय किये जिसप्रकार अन्यमती अपने शास्त्रों की आज्ञा मानते हैं, उसीप्रकार इसने जैन शास्त्रों की आज्ञा मानी।

यह तो पक्ष से आज्ञा मानना है।[१]''

ये आज्ञानुसारी जैनी भी बहुत कुछ कुलधर्मवालों के समान ही हैं; क्योंकि दोनों ही प्रकार के लोग बिना परीक्षा किये ही धर्म को स्वीकार कर लेते हैं।

यदि हम इन लोगों से प्रश्न करें कि आप रात्रि में भोजन क्यों नहीं करते ? तो कुलधर्म वाले का उत्तर होगा कि हमारे कुल में कोई भी रात्रिभोजन नहीं करता; इसलिए हम नहीं करते और आज्ञानुसारी धर्मवाले का उत्तर होगा कि हमारे गुरुओं की यही आज्ञा है या हमारे शास्त्रों में यही लिखा है कि रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए; इसलिए हम रात्रि में भोजन नहीं करते।

उक्त दोनों प्रकार के लोगों में यह कोई नहीं कहता कि रात्रिभोजन में हिंसा बहुत होती है। इसलिए हम रात्रि में भोजन नहीं करते।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि जो परीक्षा करके ही जैनी बनते हैं; परन्तु वे लोग मूल विषयों की परीक्षा तो करते नहीं; बस बाह्य दया, दान, तप, संयमादि व पूजा-प्रभावनादि कार्यों व अतिशय-चमत्कारादि से प्रभावित होकर संतुष्ट होकर जैन बन जाते हैं; परन्तु इन कार्यों की उत्कृष्टता तो अन्य मतों में भी प्राप्त हो सकती है।

तब प्रश्न उठता है कि जैनदर्शन में तो अनेक प्रकार के अनेक विषय आते हैं; उनमें से किनकी परीक्षा करनी, किनकी नहीं ?

इस संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी कहते हैं –

''जिनधर्म में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को मोक्षमार्ग कहा है। वहाँ सच्चे देवादिक व जीवादिक का श्रद्धान करने से सम्यक्त्व होता है, उनको जानने से सम्यग्ज्ञान होता है व रागादिक मिटने पर सम्यक्-चारित्र होता है। सो इनके स्वरूप का जैसा जिनमत में निरूपण किया है; वैसा अन्यत्र कहीं नहीं किया तथा जैनी के सिवाय अन्यमती ऐसा कार्य नहीं कर सकते। इसलिए यह जिनमत का सच्चा लक्षण है।

इस लक्षण को पहिचानकर जो परीक्षा करते हैं, वे ही श्रद्धानी हैं। इसके सिवाय जो अन्य प्रकार से परीक्षा करते हैं, वे मिथ्यादृष्टि ही रहते हैं।[१]''

इन सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र तथा देव-शास्त्र-गुरु के संबंध में आगे धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि के प्रकरण में चर्चा करेंगे; अत: यहाँ कुछ विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है।

कुलधर्म और आज्ञानुसारियों के अतिरिक्त भी कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जो बिना सम्यक् परीक्षा किये जिनधर्म को स्वीकार कर लेते हैं। उनकी चर्चा करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''तथा कितने ही संगति से जैनधर्म धारण करते हैं, कितने ही महान पुरुष को जिनधर्म में प्रवर्तता देख आप भी प्रवर्तते हैं, कितने ही देखादेखी जिनधर्म की शुद्ध या अशुद्ध क्रियाओं में प्रवर्तते हैं।

इत्यादि अनेक प्रकार से जीव आप विचारकर जिनधर्म का रहस्य नहीं पहिचानते और जैनी नाम धारण करते हैं। वे सब मिथ्यादृष्टि ही जानना।[२]''

इसप्रकार की परम्परा भगवान ऋषभदेव के समय से ही चली आ रही है। उनकी देखादेखी ही चार हजार राजाओं ने दीक्षा ग्रहण कर ली थी। एक प्रकार से वे सभी व्यवहाराभासी ही थे।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के साथ भी हजारों लोगों ने दिगम्बर जैनधर्म स्वीकार कर लिया था, बाद में जिनमें से अनेक लोगों ने तत्त्वाभ्यास करके सच्चा जैनत्व प्राप्त कर लिया है।

पण्डित टोडरमलजी इन सभी का समावेश व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टियों में ही कर लेते हैं।

इस प्रकरण का समापन करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''इतना है कि जिनमत में पाप की प्रवृत्ति विशेष नहीं हो सकती और पुण्य के निमित्त बहुत हैं तथा सच्चे मोक्षमार्ग के कारण भी वहाँ बने रहते हैं; इसलिए जो कुलादिक से भी जैनी हैं, वे भी औरों से तो भले ही हैं।[३]''

यद्यपि बिना परीक्षा किये कुलादि की अपेक्षा जो जैन हैं; वे अजैनों के समान ही व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि हैं; तथापि इतना अंतर तो है ही कि इन्हें सत्समागम के अवसर विद्यमान हैं। उक्त सत्समागम का लाभ लेकर ये लोग भी आत्मतत्त्व को प्राप्त करने का पुरुषार्थ कर सकते हैं।

इसप्रकार कुल अपेक्षा और आज्ञानुसारी व्यवहाराभासी जीवों की चर्चा करने के उपरान्त अब सांसारिक प्रयोजन से धर्म धारण करनेवाले व्यवहाराभासी जीवों की चर्चा करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''तथा जो जीव कपट से आजीविका के अर्थ व बड़ाई के अर्थ, व कुछ विषय-कषाय संबंधी प्रयोजन विचारकर जैनी होते

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २१५

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २१८ २. वही, पृष्ठ २१८
३. वही, पृष्ठ २१८

हैं; वे तो पापी ही हैं। अति तीव्र कषायी होने पर ऐसी बुद्धि आती है। उनका सुलझना भी कठिन है। जैनधर्म का सेवन तो संसार-नाश के लिए किया जाता है; जो उसके द्वारा सांसारिक प्रयोजन साधना चाहते हैं, वे बड़ा अन्याय करते हैं। इसलिए वे तो मिथ्यादृष्टि हैं ही।[१]''

मेरे एक मित्र हैं। एक दिन वे कहने लगे जैनधर्म से अच्छा ईसाई धर्म है; क्योंकि जो ईसाई बनता है, वे लोग उसे सभीप्रकार की लौकिक सुविधायें जुटा देते हैं। मुसलमान भी मुसलमान का साथ देता है; किन्तु जैनी जैनी का साथ नहीं देता।

मैंने उनसे कहा - ''क्या हो गया, तुम अपने साधर्मी जैन भाइयों से इतने नाराज क्यों हो ? जो न केवल जैनियों की, साथ में जैनधर्म की भी निन्दा करने लगे।''

उन्होंने छूटते ही कहा - ''मेरा अधिकारी भी जैनी है, पर वह मेरा सहयोग नहीं करता। यदि कोई मुसलमान होता तो वह अपने साधर्मी का सहयोग अवश्य करता।''

''आप अपनी योग्यता से आगे क्यों नहीं बढते ?'' जब मैंने यह कहा तो छूटते ही बोले - ''यदि योग्यता से आगे बढेंगे तो फिर जैनी अधिकारी होने का क्या लाभ है ?''

''असली बात तो यह है कि आप जैनी होने के नाते उससे अपने अनुचित कार्य कराना चाहते हो ?''- इतना सुनते ही तो वे फट पड़े।

अरे, भाई ! धर्म के नाते तो धर्म संबंधी लाभ लेना चाहिए। लौकिक अनुचित लाभ का धर्म से क्या लेना-देना ?

यदि आप धर्मलाभ लेना चाहते हैं तो स्थान-स्थान पर जैनधर्म की शिक्षा देने के लिए विद्यालय खुले हैं; उनमें न केवल आध्यात्मिक-धार्मिक शिक्षा नि:शुल्क दी जाती है, अपितु शुद्ध सात्त्विक भोजन आदि सभी सुविधायें नि:शुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं।

पर आपको धर्मलाभ लेना ही कहाँ है, आपको तो अर्थकरी विद्या पढना है; उसमें सहयोग चाहिए तथा शुद्ध-सात्त्विक भोजन कहाँ पसन्द है। आपको तो आलू-जमींकन्द वाला भोजन, वह भी रात्रि में चाहिए।

अरे, भाई ! **इस अर्थकरी विद्या में सहयोग ज्ञानदान नहीं है। इसीप्रकार अपात्र जीवों को अभक्ष्य-असात्त्विक भोजन देना आहारदान नहीं है।**

यदि आत्मानुभव करने के लिए देशनालब्धि चाहिए, यदि शुद्ध तत्त्वज्ञान जानना है तो अनेक स्थानों पर अनुभवी विद्वानों के, संतों के आध्यात्मिक प्रवचन होते हैं, शिविर लगते हैं; लगभग सर्वत्र सभीप्रकार की सुविधायें नि:शुल्क ही उपलब्ध रहती हैं; लीजिये न पूरा लाभ।

अरे, भाई ! सांसारिक प्रयोजन से धर्मलाभ लेनेवालों में अकेले वे लोग ही नहीं आते, जो लोग ये सुविधायें प्राप्त करने के लिए जैनधर्म स्वीकार करते हैं; अपितु वे लोग भी आते हैं; जो कुल अपेक्षा जैन हैं, आज्ञानुसारी ही जैन हैं; परन्तु धर्म के नाम पर अपना लौकिक स्वार्थ पूरा करना चाहते हैं। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २१८

जैनत्व जागरण संस्कार शिविर संपन्न

बकस्वाहा (म.प्र.) : भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के पावन अवसर पर दिनाँक ७ से १३ नवम्बर तक बुन्देलखण्ड के विभिन्न ३१ स्थानों पर कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के आयोजकत्व में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन बकस्वाहा द्वारा द्वितीय जैनत्व जागरण संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का भव्य सामूहिक उद्घाटन समारोह बकस्वाहा मुमुक्षु मण्डल द्वारा किया गया, जिसमें पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित चैतन्यजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित नीरजजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित विमोशजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित अनुरागजी शास्त्री भगवां, पण्डित राहुलजी शास्त्री दमोह, पण्डित सौरभजी शास्त्री खड़ैरी आदि विद्वान मंचासीन थे।

इस शिविर में १४५० बच्चों सहित लगभग २३५० साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया, जिनमें ३०० से अधिक जैनेतर लोग भी सम्मिलित थे। गांव-गांव में पाठशालायें भी प्रारंभ की गई।

शिविर में श्री टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय के वर्तमान एवं भूतपूर्व विद्वान पण्डित अमितजी विदिशा, पण्डित संभवजी शास्त्री नैनधरा, पण्डित नितिनजी खड़ैरी, पण्डित अभिषेकजी मड़देवरा, पण्डित विवेकजी मड़देवरा, पण्डित भावेशजी उदयपुर, पण्डित सूरजजी कोल्हापुर, पण्डित पंकजजी हिंगोली, पण्डित आशीषजी मड़ावरा, पण्डित आशीषजी भगवां, पण्डित सचिनजी भगवां, पण्डित सौरभजी अमरमऊ, पण्डित विक्रान्तजी भगवां, पण्डित सुदीपजी अमरमऊ, पण्डित राहुलजी नौगांव, पण्डित अनेकान्तजी दलपतपुर, पण्डित अभिषेकजी सिलवानी, पण्डित आतमजी बांसवाड़ा, पण्डित अखिलेशजी कोटा, पण्डित अंकितजी बांसवाड़ा, पण्डित नीलेशजी घुवारा, पण्डित संजयजी अजनौर, पण्डित सचिनजी सागर, पण्डित अभयजी बकस्वाहा, पण्डित नीशुजी मड़देवरा, पण्डित संदेशजी मजगुवां आदि का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर का निरीक्षण युवा फैडरेशन बकस्वाहा द्वारा किया गया।

शिविर का सामूहिक समापन समारोह बकस्वाहा में हुआ, जहां सभी विद्वानों, प्रभारियों एवं बच्चों को सम्मानित किया गया।

शिविर का सफल संचालन पण्डित चैतन्यजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा एवं पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

शिविर के दौरान अहिंसा अभियान ह्न पटाखों से होने वाली अनंत जीवों की हिंसा एवं पर्यावरण प्रदूषण रोकने हेतु बुन्देलखण्ड के छोटे-बड़े नगरों तक अहिंसा जागरण अभियान चलाया गया। इसमें लगभग १२०० बच्चों एवं बड़ों ने पटाखे न फोड़ने हेतु संकल्प-पत्र भरे। साथ ही संपूर्ण बकस्वाहा स्तर पर पटाखों से होने वाली जन-धन की हानि एवं पर्यावरण प्रदूषण विषय पर निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें ३०० विद्यार्थियों ने भाग लेकर अहिंसा के स्वरूप को समझकर अहिंसामयी दीपावली मनाने का संकल्प किया।

इस अवसर पर पण्डित संतोषजी शास्त्री द्वारा बनाई गई फिल्म **'STOP CREKERS'** जगह-जगह लगभग १४०० लोगों के बीच दर्शायी गयी, जिसके फलस्वरूप जैनों के अतिरिक्त जैनेतर लोगों ने भी अहिंसामयी दीपावली मनाने का संकल्प लिया।

2 दिसम्बर 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

श्री सिद्धचक्रमण्डल विधान एवं बालसंस्कार शिविर संपन्न

गोरमी-भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री बाहुबलि दि.जैन मंदिर में दिनाँक १३ से २१ नवम्बर तक श्री सिद्धचक्रमण्डल विधान एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, श्री प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर, पण्डित कमलेशकुमारजी शास्त्री मौ, पण्डित सुनीलजी शास्त्री मुरार, पण्डित पूरनचन्द्रजी सोनागिरि आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में सैंकड़ों बच्चों एवं साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। दिनाँक २१ नवम्बर को प्रात: भव्य जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता पांडे मक्खनलाल-श्रीमती कमलादेवी जैन थे। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी बांसवाड़ा एवं पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बांसवाड़ा के निर्देशन में संपूर्ण हुये।

पटाखे न फोड़ने वाले बच्चे सम्मानित

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक १४ नवम्बर को बाल दिवस के अवसर पर फतह स्कूल सभागार में दीपावली पटाखा निषेध संकल्प पुरस्कार एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम प्रभारी सचिन जैन शास्त्री ने बताया कि समारोह की अध्यक्षता समाजसेवी श्री भागचंदजी कालिका ने की। मुख्य अतिथि मेकेनर्स इण्डिया के श्री प्रशान्तजी जैन थाया एवं विशिष्ट अतिथि श्री प्रमोदजी सामर (भाजपा प्रदेश मंत्री), श्री पारसजी सिंघवी (अध्यक्ष-नगर परिषद समिति), श्री प्रशांतजी अग्रवाल (सचिव-नारायण सेवा संस्थान), डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री (प्रदेश उपाध्यक्ष), श्री सुजानमलजी गदिया (समाजसेवी) एवं श्री कमलजी भोरावत थे।

इस अवसर पर युवा फैडरेशन प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री ने कहा कि संपूर्ण राजस्थान में इस बार २०१३५ बच्चों ने पटाखे नहीं फोड़े। फैडरेशन ने एक शपथ-पत्र बनाया था, जिसमें शपथकर्त्ता, उसके माता-पिता, दादा-दादी एवं पड़ौस के हस्ताक्षर करके निर्धारित तिथि तक जमा कराने थे। सही प्रविष्टियाँ करने वालों को युवा फैडरेशन द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्री शास्त्री ने कहा कि वर्ष २०११ में ५१००० युवा एवं बच्चों को पटाखे न फोड़ने का संकल्प दिलाने का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही राजस्थान के विभिन्न नगर-निगम एवं नगर -परिषद में दीपावली पर की जाने वाली आतिशबाजी पर आग्रहपूर्वक रोक लगवाने का प्रयास किया जायेगा।

कार्यक्रम का संचालन फैडरेशन के जिला प्रभारी पण्डित खेमचंदजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित जयेशजी शास्त्री ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

शोक समाचार

1. भीलवाड़ा निवासी श्रीमती चन्द्रकलादेवी ध.प. श्री महाचन्दजी सेठी (इम्फाल वाले) का दिनाँक 16 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 5100/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. इन्दौर निवासी श्रीमती मालती देवी जैन ध.प. श्री हुकमचंदजी जैन शाह बजाज का दिनाँक 31 अक्टूबर को 65 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि श्री हुकमचंदजी जैन शाह बजाज दि.जैन महासमिति के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, वरिष्ठ समाजसेवी एवं उद्योगपति हैं।

3. इन्दौर निवासी श्री भानुकुमारजी बड़जात्या का दिनाँक 14 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत पुराने मुमुक्षु एवं अत्यंत स्वाध्यायी थे।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनांक 27 नवम्बर को ब्र. विमलाबेन की अध्यक्षता में **गोम्मटसार कर्मकाण्ड : एक अनुशीलन** विषय पर शास्त्री द्वितीय व तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों हेतु गोष्ठी का आयोजन हुआ।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में नकुल जैन शास्त्री द्वितीय वर्ष एवं आकाश जैन शास्त्री अन्तिम वर्ष चुने गये।

आभार प्रदर्शन महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद ने किया। मंगलाचरण विशाल उपाध्याय (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन राहुल जैन नौगांव व सुदीप जैन अमरमऊ ने किया।

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : info@ptst.in **फैक्स :** (0141) 2704127